Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

# विद्यापतिक जीवन–वृत्त आ रचना

**राजीव कुमार झा**

शोधार्थी, पूणियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ

**Article Info**
Volume 5, Issue 3
Page Number : 129-142

**Publication Issue :**
May-June-2022

**Article History**
Accepted : 01 May 2022
Published : 30 May 2022

मैथिली साहित्यक तोरण द्वार पर स्वर्णाक्षरमे अपन नाम अंकित करौनिहार– महाकवि विद्यापति भारतीय कवि परम्पराक शालीनताक निर्वहन करैत, अपना विषयमे किछु नहि लिखने छथि। प्रारंभमे बंगाली विद्वान लोकनि हिनका बंगलाक कवि मानैत छलाह मुदा बादमे राजकृष्ण मुखोपाध्याय हिनक परिचयकेँ सौझरौलनि आ डॉ॰ ग्रियर्सन हिनक पूर्वज लोकनिक परिचय प्रकाशित कयलनि। विद्वान प्राध्यापक, समीक्षक, साहित्यकार डॉ॰ शैलेन्द्र मोहन झा लिखने छथि– "सर्वप्रथम राजकृष्ण मुखोपाध्याय 1875 ई॰मे बंग दर्शन (ज्येष्ठ अंक)मे विद्यापतिक मैथिलत्वकेँ प्रमाणित क' हुनक अधिवासक समस्याकेँ सोझारौलनि। पश्चात डॉ॰ ग्रियर्सन एकर समर्थन कयलनि आ मिथिलाक पंजीक अनुशीलन क' अपन 'मैथिली क्रेस्टोमैथी (1882 ई॰) नामक ग्रंथमे विद्यापतिक प्राक्तन सात पुरुष ओ अधस्तन बारह पुरुषक नामावली प्रकाशित कयलनि।"[1]

---

मैथिली भाषामे लिखल मैथिली साहित्यक प्रथम इतिहासकार डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लिखने छथि– "विद्यापतिक जन्म गढ़ बिसपफीक शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यान्दिन शाखाक काश्यप गोत्रीय मैथिल ब्राह्मण परिवारमे भेल। एहि वंशक बीजी पुरुष छलाह विष्णु ठाकुर।"[2]

कोनो विद्वान वा मनीषीक काल (जन्म, मृत्यु) निर्धारणमे तीन आधारक आश्रय लेल जाइत अछि– अन्तः साक्ष्य, बहिः साक्ष्य एवं जनश्रुति। विद्यापतिक काल निर्धरणमे एहि तीनू तत्वक आश्रय लेल जाइत अछि। अन्तः साक्ष्यक अन्तर्गत हुनकर रचित ग्रन्थ, बहिः साक्ष्यक अन्तर्गत समसामयिक अन्यान्य–ग्रंथ आ जनश्रुतिक (किंवदंती) अन्तर्गत कहल–सुनल बात अबैत अछि। जेना कि पहिने चर्च भऽ चुकल अछि जे ओ अपना विषयमे विशेष किछु नहि लिखने छथि मुदा हुनक लिखल किछु ग्रन्थक आधारक आश्रय एहि दिशामे सहायक सिद्ध होइत अछि।

1. विद्यापतिक हस्तलिखित भागवतक अन्तमे लं॰ सं॰ 309क उल्लेख अछि।
2. विद्यापतिक सनदमे लं॰ सं॰ 293क उल्लेख अछि।
3. लं॰ सं॰ 252क लगभग (जखन गणेश्वरक मृत्यु भेल) विद्यापति कीर्तिलताक रचना कयने छलाह।
4. लिखनावली संभवतः 299 लं॰ सं॰मे लिखल गेल।
5. देवसिंहक मृत्यु लं॰ सं॰ 293मे भेल आ ओहि वर्ष राजा शिवसिंहक राज्याभिषेक भेल।

**Copyright: ©** the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लिखने छथि – "अपन अवहट्ठक निम्नलिखित गीत– पंक्तिमे देवसिंहक मृत्युक तिथि तथा म॰ शिवसिंहक सिंहासनारुढ़ होएबाक तिथिक स्पष्ट उल्लेख विद्यापति कएने छथि–

"अन्ल रन्ध्र कर लक्खन णखइ सक समुद्द कर अगिनि ससी
चैत कारि छठि जेठा मिलिओ बार बेहप्पइ जाए लसी।"

एकर अनुसार ओ तिथि छल लं॰ सं॰ 293क चैत्रा वदि 6, जखन चन्द्रमा ज्येष्ठामे छलाह आओर दिन छल मंगल। एहिमे लं॰सं॰क संग–संग शक–संवतक उल्लेख सेहो छैक 1324 अर्थात 1402 ई॰"[3] मुदा ई महाकविक जन्मतिथिक निर्णयक आधार प्रमुख रूपसँ जनश्रुतिकेँ मानने छथि–

"विद्यापतिक जन्म–तिथि–निर्णय परम्परासँ प्रसिद्ध श्रुतिक आधारे पर करए पड़ैत अछि, कारण अपन जन्मतिथिक उल्लेख विद्यापति कतहु नहि कएने छथि आ ने कोनो कवि अथवा विद्वाने कएने छथि। जनश्रुतिक आधार पर विद्यापतिक प्रसंग चन्दा झा 'पुरुष–परीक्षा'क अनुवादमे लिखने छथि जे विद्यापति म॰ शिवसिंह सँ दू वर्ष जेठ छलाह। राज्यारोहणक समय म॰ शिवसिंहक अवस्था छल 50 वर्षक, तँ विद्यापतिक अवस्था छल 52 वर्षक। 293 लं॰सं॰ अथवा 1324 अथवा 1402 ई॰मे विद्यापतिक जन्म तिथि निश्चित होइत अछि। डॉ॰ सुभद्र झा, प्रो॰ रमानाथ झा एवं शशिनाथ झा सेहो इएह तथ्यकेँ मानैत छथि किन्तु डॉ॰ उमेश मिश्र ओ डॉ॰ जयकान्त मिश्र हिनक जन्मतिथिकेँ स्वीकार करैत छथि 241 ल॰सं॰ (1360)। हुनका लोकनिकेँ अवहट्टक पद दिसि ध्यान नहि गेलैन्हि अछि आओर प्रायः तँ किलहार्नक मतानुसार लक्ष्मण संवतक आरम्भ 1119 ई॰सँ मानैत विद्यापतिक जन्मतिथि 1360 ई॰ मानैत छथि।"[4]

भारत सरकार द्वारा जारी डाक–टिकटमे सेहो हिनक जन्म 1360 ई॰ अंकित अछि। हिनक मृत्यु–तिथि–निर्णय अपेक्षाकृत बेसी फरिछांयल अछि। विद्वान लोकनिक मत अछि जे म॰ शिवसिंहक राज्यकाल 3 वर्ष 9 मास धरि रहल अर्थात लं॰ स॰ 296क पूस मास धरि ओ राजा छलाह। तत्पश्चात् मुसलमान आक्रान्तासँ युद्ध करैत युद्धभूमि सँ नहि धुरलाह आ लापता भऽ गेलाह। बारह वर्ष धरि पतिक प्रतीक्षा कयलाक पश्चात रानी लखिमा सती भऽ गेलीह। महाराज शिवसिंह 1402 ई॰मे राज्यासीन भेलाह आ मुसलमानक संग हुनक युद्ध 1406 ई॰मे भेल। अतः लखिमा देवी सती 1418–19 ई॰मे भेलीह। महाकवि विद्यापतिक एकटा पद भेटैत अछि– संपन देखल हम शिवसिंह भूप। बत्तीस बरस पर सामर रूप। 'ब्रह्मवैवर्त पुराण'क अनुसार कोनो मरल व्यक्तिकेँ स्वप्नमे देखलाक बाद जँ स्वप्न रातिक पहिल पहरमे देखल जाय तँ एक वर्षमे दोसर पहरक आठ मासमे, तेसर पहरक तीन मासमे आ चारिम पहरक स्वप्नमे 15 दिनमे स्वप्नद्रष्टाक मृत्यु भऽ जाइत अछि। तदनुसार आठ मासमे (लं॰स॰ 329मे) विद्यापतिक मृत्यु भेल। हिनक एकटा पद भेटैत अछि– "विद्यापतिक आयु अवसान। कार्तिक ध्वल त्रायोदशी जान।"

तँ इएह तिथि 329 लं॰ सं॰क कार्तिक शुक्ल त्रायोदशीकेँ विद्यापतिक मृत्यु भेल। जन्म तिथिक निश्चित ज्ञान नहि रहला सँ महाकवि विद्यापतिक जयन्ती एहि तिथिकेँ मनाओल जाइत अछि। डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' हिनक मृत्यु वर्ष 1439–40, डॉ॰ सुभद्र झा 1448 सँ 1461 धरि, डॉ॰ उमेश मिश्र 1446, डॉ॰ जयकान्त मिश्र 1448,

पं॰ शशिनाथ झा 1450 एतेक धरि निश्चित अछि जे ई दीर्घजीवि भेल छलाह। सम्पादक द्वय रामदेव झा आ मोहन भारद्वाज साहित्य–अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'विद्यापति–गीत संचय' नामक पोथीक प्राक्कथन (पृ.–8)मे कहने छथि– 'विद्वान लोकनि विभिन्न प्रमाणक आधार पर हुनक जीवनकालक सम्बन्धमे विचार कयलनि अछि। एहिमे मत–वैभिन्य विशेष देखल जाइत अछि। सामान्यतः विद्यापतिक स्थिति काल 1360 ई॰सँ 1440 ई॰ धरि मानल जाइत अछि। एहिमे दस–पाँच वर्षक आगाँ–पाछाँ अन्तर होयब सर्वथा सम्भव अछि। एतबा निश्चयपूर्वक कहल जा सकैत अछि जे विद्यापति चौदहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध ओ पन्द्रहम शताब्दीक पूर्वाद्ध (1350–1450)मे अवश्ये विद्यमान छला।'

विद्यापतिक जन्म बिसफी नामक गाममे भेल छल। बिहार राज्यक वर्त्तमान दरभंगा कमिश्नरीक प्रसिद्ध जिला अछि मधुबनी जे उक्त कमिश्नरीक एकदम उत्तरी भागमे अवस्थित अछि। कमिश्नरीक मुख्य स्थान दरभंगा सँ रेलवे लाइन तीन दिसि गेल अछि– एक पश्चिमोत्तर दिसि, दोसर पूब दिसि आ तेसर दक्षिण दिसि। पश्चिमोत्तर दिस गेल लाइन पर कमतौल नामक एकटा स्टेशन अछि जे दरभंगा सँ लगभग चौदह मील पर अवस्थित अछि। एहि स्टेशनक उत्तर–पूर्व दिशामे लगभग पाँच मीलक दूरी पर महाकवि विद्यापतिक जन्मभूमि 'बिसफी' वा गढ़ बिषपी बसल अछि। ई गाम वर्त्तमान मधुबनी जिला सँ पश्चिम बिसफी थानान्तर्गत जरैल परगनामे अछि। बिसफीकेँ कतेक गोटा गढ़ बिसफी सेहो कहैत छथि तकर प्रधान कारण ई अछि जे पंजी प्रबन्धमे बिसफीक संग ईहो नाम आयल अछि। नगेन्द्रनाथ गुप्त आ रामवृक्ष बेनीपुरीक मत छनि गढ़ बिसफी बिसफीयेक पुरान नाम हो। विद्वान लोकनिक कहब छनि जे प्राचीन बिसफी वा बिसफी गाममे अनेक टोल छल आ जाहि टोलमे विद्यापति जन्म लेलनि ओ गढ़ बिसफी नाम सँ जानल जाइत छल। बिसफी बहुत पैघ गाम छल जे लगभग चारि कोसमे पसरल छल। मिथिलामे एहि गामक विषयमे कहल जाइत छल जे 'बीसा सए हर बिसफी बहए तइयो बिसफी पड़ले रहय। किछु विद्वानक मत छनि जे विद्यापतिक पूर्वज पहिने 'बिसइबार' नामक गाममे रहैत छलाह जे बादमे निकटमे स्थित बिसफी गाममे स्थायी रूप सँ रहय लगलाह। हिनक वंशज वर्त्तमानमे सौराठ गाममे रहैत छथि। हिनक वंशज 'एकनाथ ठाकुर' अपना पिता पं॰ तुला ठाकुरक निधनक बाद सौराठ गाममे बसि गेल छलाह जतय हिनका लोकनिक सात सय बीघा खेत छलनि। ओना तँ म॰ शिवसिंह बिसफी परगना महाकवि विद्यापतिकेँ दानस्वरूप दऽ देने दलथिन। डॉ॰ श्रीश लिखने छथि– "म॰ शिवसिंह द्वारा विद्यापतिकेँ प्रदत्त बिसफी गामक ताम्रपत्रामे लं॰स॰ 293क श्रावण शुदि 7 मंगल दिन लिखल छैक।"[5]

**बाल्यकाल :–** महाकवि विद्यापतिक बालावस्थाक संबंधमे कोनो प्रमाणिक विवरण नहि भेटैत अछि मुदा विद्वान लोकनिक मानब छनि जे ई बाल्यावस्थहिसँ अत्यन्त कुशाग्र बुद्धिक छलाह। हिनक पिता गणपति ठाकुरक संबंधमे आचार्य रमानाथ झाक कहब छनि जे ओ एक सामान्य व्यक्ति छलाह, मुदा किछु विद्वान लोकनिक मत छनि जे ओ 'कुल चिन्तामणि' एवं अन्य पोथीक संग–संग किछु मैथिली पदक रचना सेहो कयने छलाह। विद्यापति बाल्यकालसँ पिताक संग गणेश्वर राजाक दरबार जाइत छलाह। म॰ म॰ हरि मिश्र हिनक अध्यायक आ म॰ म॰ पक्षधर मिश्र हिनक सहपाठी छलथिन जे अवस्थामे हिनका सँ छोट छलाह।

**उपाधि :–** "महाकवि विद्यापतिक निम्नलिखित उपाधि कहल जाइत अछि– अभिनव जयदेव, महाराज पण्डित, सुकवि कण्ठहार, सरस कवि, कविकण्ठहार, कविवर, सुकवि, नव जयदेव प्रभृति।"[6] अभिनव जयदेव तँ बिसफीक ताम्रपत्रामे सेहो लिखल अछि।

**सम्प्रदाय :–** महाकवि विद्यापति अनेक भाव–बोधक कविता लिखलनि। किछु विद्वान हिनका श्रृंगारिक तँ किछु भक्त कवि मानने छथि। हिनक धार्मिक सम्प्रदायक संबंधमे विचार व्यक्त करैत डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश', रामवृक्ष बेनीपुरी, पं॰ शिवनन्दन ठाकुर, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', रामचन्द्र शुक्ल आदि विद्वान हिनका शैव, बाबू राम सक्सेना स्मार्त्त आ शाक्त, डॉ॰ उमेश मिश्र एवं नरेन्द्र नाथ दास 'त्रिदेवोपासक' 'म॰ म॰ हरप्रसाद शास्त्री, पं॰ रमानाथ झा आदि विद्वान 'पंच देवोपासक' मानने छथि।

**विद्यापतिक रचना :–** महाकवि विद्यापतिक रचना तीन भाषामे उपलब्ध अछि– संस्कृत, अवहट्ठ आ मैथिली। हिनक विद्वताक परिचय हिनक रचनेसँ प्राप्त होइत अछि। ओ अन्य विषय पर विविध ग्रंथ संस्कृतमे लिखलनि संगहि अवहट्ठमे 'कीर्तिलता' ओ 'कीर्त्तिपताका' तथा मैथिलीमे प्रचुर पदावलीक रचना कयलनि।

**अवहट्ठ रचना :– 1. कीर्तिलता** :– ई अवहट्ठ भाषामे लिखल विद्यापतिक प्रथम प्रमाणिक रचना थिक। कीर्तिलताक संग एहि रचनाक सूचना डॉ॰ ग्रियर्सनकेँ तखन भेटल छल जखन ओ विद्यापतिक पदक संग्रह कऽ रहल छलाह मुदा ओहि काल हुनका प्राचीन हस्तलेख उपलब्ध नहि भऽ सकल। एकर प्राचीन हस्तलेखक पता सर्वप्रथम 1898 ई॰मे म॰ म॰ हरप्रसाद शास्त्रीकेँ काठमांडूमे लागल। 1922 ई॰मे ई नेपालसँ एकर प्रतिलिपि अनलनि आ एकर प्रथम संस्करण हिनके सम्पादनमे 1924 ई॰मे कलकत्ताक ओरिएण्टल प्रेससँ प्रकाशित भेल। तकर बाद अनेको विद्वानक सम्पादनमे ई पोथी छपल ताहिमे प्रमुख छथि डॉ॰ बाबूराम सक्सेना, शिव प्रसाद सिंह, डॉ॰ उमेश मिश्र, डॉ॰ बीरेन्द्र श्रीवास्तव, पं॰ रमानाथ झा, डॉ॰ बासुदेव नारायण अग्रवाल आदि। एहिमे रमानाथ बाबूक सम्पादनमे प्रकाशित पोथी बेसी प्रमाणिक अछि जे मुख्यतः ब्रिटिश म्यूजियम लंदनमे सुरक्षित 'कीर्तिलता'क ओहि प्रतिलिपिपर आधारित अछि जकरा 1905 ई॰केँ कवीश्वर चन्दा झा कलकत्तामे लिखि तैयार (जकरा ओ ग्रियर्सन के देलनि) कयने रहथि आ रमानाथ बाबू समस्त हस्तलेख आ प्रकाशित संस्करण सभक उपयोग कयने छथि। ई महाकवि विद्यापतिक पहिल रचना थिक ताहिमे विद्वानक मध्य मतैक्य नहि अछि। इतिहासकार डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लिखने छथि– "एकर अंतिम श्लोकमे म॰ म॰ हरप्रसाद शास्त्री 'खेलन कवि'क जे पाठ देल अछि, ताहिसँ भ्रमक सेहो बड़ प्रचार भेल जे ई विद्यापतिक प्रथम ग्रन्थ थिक। डॉ॰ उमेश मिश्र, विमान बिहारी मजुमदार, डॉ॰ जयकान्त मिश्र, पं॰ उपेन्द्र ठाकुर प्रभृतिक द्वारा सेहो इएह पाठ शुद्ध मानि लेल।"[7]

**2. कीर्तिपताका :–** ई अवहट्ठ भाषामे रचित विद्यापतिक दोसर प्रमाणिक रचना थिक। एकर अंतमे रचयिताक रूपमे स्पष्ट रूपसँ विद्यापतिक नामोल्लेख अछि। एकर पहिल प्रकाशन 1960 ई॰मे डॉ॰ उमेश मिश्रक सम्पादनमे भेल जाहिमे हुनक अनुमान छनि जे एकर रचना राजा अर्जुन राय आ जगत सिंहक आश्रममे भेल होयत मुदा एहि कृतिक सम्यक परीक्षणसँ एहन लगैत अछि जे एकर रचना राजा शिवसिंहक पलायनक पश्चात भेल होयत

कियेक तँ वास्तवमे हुनके यशोगाथाकेँ आधार बना, एकर रचना कयल गेल अछि। पोथी खण्डित अवस्थामे अछि जकर बीस पत्र नष्ट भऽ गेल अछि। तेँ कहब कठिन अछि जे एहिमे ग्रंथकार की लिखने छलाह। एहि ग्रंथक उत्तरार्द्ध महाराज शिवसिंहक बीरता सँ सम्बद्ध रखैत अछि। तेँ अंदाज कयल जाइत अछि जे नष्ट भेल पत्रमे शिवसिंहक शृंगारिक पक्षक वर्णन होअय। एहि रचनाक पूर्वार्द्ध शृंगार रस प्रधान अछि। तँ उत्तरार्द्ध वीर रस प्रधान। मैथिली साहित्यक हंसवृत्ती समीक्षक आचार्य रमानाथ झा लिखने छथि– "ओना तँ विद्यापति अपन प्रभु शिवसिंहक कीर्त्तिपताका सएह फहराए गेल छथि परन्तु कीर्त्तिपताका नष्ट भए गेल, लुप्त प्राय अछि। कीर्त्तिपताका कहि जे ग्रंथ प्रकाशित भेल अछि तकर प्रस्तावनामे 'जगतसिंहक' कीर्त्तन अछि परन्तु जतबओ विद्यापतिक रचना उपलब्ध अछि निश्चित रूप सँ विद्यापतिक रचना प्रमाणित होइत अछि, ततबहुँ सँ शिवसिंहक सम्बन्धमे बहुतो ज्ञातव्य विषय ज्ञात भए जाइत अछि।"[8]

डॉ॰ बासुकीनाथ झा अपन पोथी 'विद्यापति काव्यालोचन'मे लिखने छथि जे ई ग्रन्थ सेहो अवहठ भाषामे रचित अछि। एहिमे म॰ शिवसिंहक यशोवर्णन अछि। ई ग्रन्थ पद्यमय अछि तथा यदाकदा संस्कृतक श्लोक सेहो समाविष्ट अछि। डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' अपन इतिहासमे लिखने छथि– "विद्यापतिक दोसर अवहठ भाषाक ग्रंथ थिक कीर्त्तिपताका। एहि मध्य महाराज शिवसिंहक यश–प्रशस्त अछि। एहि ग्रन्थक रचना मुख्यतः दोहा ओ छन्दमे अछि मुदा कतहु–कतहु संस्कृतक श्लोक सेहो अछि ओ मध्य–मध्यमे गद्यक रचना सेहो अछि।"[9]

किछु विद्वानक मत छनि जे एहिमे दू रचनाक विवरण एक संग सम्मिलित भऽ गेल अछि। रचनाक उत्तर्राद्धक नाम कीर्त्तिपताका अछि एहिमे कोनो सन्देह नहि। एकर पूर्वार्द्धकेँ शशिनाथ झा 'रस वाणी' वा 'रस मंजरीक' संज्ञा देने छथि तँ डॉ॰ इन्द्रकान्त झा एकरा 'हरिकेलि' कहने छथि।

**संस्कृत रचना :–**

**1. भूपरिक्रमण :–** डॉ॰ विमान बिहारी मजुमदार, रमानाथ बाबू, डॉ॰ मुनीश्वर झा, डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश', डॉ॰ बासुकीनाथ झा आदि विद्वान एहि पोथीकेँ विद्यापतिक प्रथम रचना मानने छथि। डॉ॰ श्रीश कहने छथि– "एकरा भूगोल आ नीति दुनू विषयक ग्रन्थ कहि सकैत छी। भाषा–शैली आदि सब दृष्टिएँ ई विद्यापतिक प्रथम रचना सिद्ध होइत अछि।"[10]

डॉ॰ बासुकीनाथ झा कहने छथि– "एहि आधार पर आचार्य रमानाथ झा 'भूपरिक्रमा' एवं 'कीर्त्तिलता'केँ विद्यापतिक प्रथम रचना मानैत छथि। ओइनवार वंशक जतेक राजा–रानीक आज्ञासँ विद्यापति रचना कएलन्हि, ताहिमे देवसिंह सभसँ वयोवृद्ध छलाह। भाषा तथा रचना शैली सेहो 'भूपरिक्रमा'केँ विद्यापतिक प्रथम रचना सिद्ध करैत अछि।"[11] मुदा अधिकांश विद्वान एकरा 'कीर्त्तिलता'क पश्चातक रचना मानैत रचना–क्रमक दृष्टिसँ विद्यापतिक दोसर रचना मानलनि अछि। किछु विद्वान एहि पोथीक नाम 'भूपरिक्रमण' तँ किछु 'भूपरिक्रमा' लिखने छथि जे महाराज देवसिंहक आज्ञासँ लिखल गेल जाहिमे नैमिषारण्यसँ मिथिला (जनकदेश) मध्य आठ देशक तीर्थ वर्णन

आठ कथामे कयल गेल अछि। ई पोथी पौराणिक आख्यानक रूपमे लिखल गेल अछि जे ऐतिहासिक आ भौगोलिक दुनू दृष्टियेँ महत्वपूर्ण अछि। एहि पोथीक माध्यमसँ विद्यापति भूगोलशास्त्री बाला प्रतिभापर प्रकाश पड़ैत अछि मुदा पं. शिवनन्दन ठाकुरक कथनानुसार एकरा भूगोल विषयक पोथीक श्रेणीमे नहि राखल जा सकैछ। देवसिंह असलानक आक्रमणक कारणे राज्याच्युत भऽ नैमिषारण्य चलि गेल रहथि तेँ पोथीमे हुनक नामक आगाँ महाराज उपाधि नहि लगाओल गेल अछि। पोथी पौराणिक आख्यान पर आधारित अछि जाहिमे सूतबधजन्य ब्रह्महत्या लगला पर बलदेवकेँ पापसँ मुक्त होयबाक लेल महर्षि धौम्य भूपरिक्रमा करबाक आदेश दैत छथि। जेना 'कीर्त्तिलता' पोथीक रचनामे महाकवि विद्यापति परम्परागत अपभ्रंश भाषाकेँ नहि छोड़लनि अछि, तहिना संस्कृतक प्रथम ग्रंथ 'भूपरिक्रमण'मे परम्परागत पौराणिक शैलीकेँ नहि छोड़ि सकलाह। 'भूपरिक्रमण' पोथीमे विद्यापतिक योजना छल पैंसठि (65) देशक वर्णन पैंसठि कथामे करब मुदा देवसिंहक संग मिथिला घुरि अयबाक कारणे ई पोथी अधूरे रहि गेल आ अपन पोथी 'पुरुष–परीक्षा'मे एहि आठो कथाकेँ समाविष्ट कयल गेल।

**2. पुरुष परीक्षा :–** पुरुष परीक्षा विद्यापतिक दोसर प्रमाणिक संस्कृत रचना मानल जाइत अछि जे राजा शिवसिंहक आज्ञासँ लिखल गेल अछि। ई ग्रंथ नीतिपूर्ण कथा सभक एक संग्रह थिक जे पंचतंत्र, हितोपदेश आदि प्राचीन ग्रन्थ परम्परामे रचित भेल अछि। ग्रंथ चारि परिच्छेदमे विभाजित अछि– प्रथममे वीर, दोसरमे सुबुद्धि, तेसरमे सुविद्य आ चारिम परिच्छेदमे चारु पुरुषार्थक प्रतिपादक कथा अछि। कथाक अवान्तर उपकथा सेहो समाविष्ट अछि। ई विद्यापतिक सर्वश्रेष्ठ संस्कृत रचना थिक आ एहि पोथीक सर्वोच्च सफलताक रहस्य थिक एवं संवाद–शैलीक विशिष्ट रूप–विधान आ कथाक संग प्रतिकथाक निरूपण। अन्वय–व्यतिरेक शैलीमे प्रत्येक उदाहरणक प्रत्युदाहरण देब, एकर शिल्पक अपन विलक्षणता थिक। एहिमे कुल 44 टा कथाक समावेश अछि। कथावस्तु एहि प्रकारेँ अछि– चन्द्रतपा नामक नगरमे पारावार नामक राजा छलाह जिनका पद्मावती नामक कन्या छलथिन। हुनक विवाहक प्रसंग चिन्तातुर राजा सुबुद्धि नामक मुनिसँ कन्याक समतुल्य वरक विषयमे पुछैत छथि जकर उत्तरमे मुनि कहैत छथि जे कोनो पुरुषसँ विवाह करियौन। अकबकाइत राजा मुनिसँ पुछैत छथि जे हे मुनिवर! जे पुरुष नहि, से वर कोना हेताह? सुबुद्धि मुनि वरक लक्षण निरूपित करैत छथि। अद्भुत रससँ प्रारंभ एहि ग्रंथमे वीर, शृंगार आ अन्य रसक निरूपण भेल अछि। 'पुरुष–परीक्षा' विद्यापति आ हुनक युगक साक्षात दर्पण थिक।

डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लिखने छथि– "पंचतंत्र हितापदेश आदि परम्पराक ई नीति कथा थिक।..... एकर भाषा प्रगल्भ ओ प्रसादपूर्ण अछि।"[12]

**3. लिखनावली :–** लिखनावली विद्यापतिक तेसर प्रमाणिक संस्कृत रचना मानल गेल अछि। राजा पुरादित्यक गिरिनारायणक आज्ञासँ 299 लं॰ स॰मे संस्कृत पढ़ल–लिखल लोक सभकेँ पत्र–व्यवहारमे शिक्षित करबाक उद्देश्यसँ महाकवि द्वारा एकर रचना भेल। सर्वप्रथम एकर प्रकाशन 1901 ई॰मे दरभंगा यूनियन यंत्रालयसँ भेल। पोथीक प्रारंभमे मंगलाचरणमे गणेशक वन्दना कयल गेल अछि आ तत्पश्चात चारि कोटिक 84 टा पत्रक नमूना संकलित

अछि जाहिमे उच्च लोकनिक हेतु 18, छोट लोकनिक हेतु 28, समकक्ष लोकनिक हेतु 7 आ नियम व्यवहारोपयोगी 31टा पत्र संकलित अछि। प्रत्येक श्रेणीक पत्रक लेल विद्यापति एहिमे पृथक शैलीक प्रयोग कयने छथि।

**4. विभागसार :–** विभागसारकेँ महाकवि विद्यापतिक चारिम प्रमाणिक संस्कृत रचना मानल गेल अछि जे ओइनवार वंशीय महाराज नरसिंहदेवक आज्ञासँ लिखल गेल छल। सभसँ पहिने एकर प्रकाशन राधकृष्ण चौधरी अपन सम्पादनमे 'मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति' नामक ग्रंथक परिशिष्टमे कयलनि। सन 1976 ई॰मे पं॰ गोविन्द झाक सम्पादनमे मैथिली अकादमी, पटनासँ एकर स्वतंत्र रूपसँ प्रकाशन भेल।

5. **दुर्गा भक्ति तरंगिणी :–**एकरा विद्यापतिक पाँचम संस्कृत रचना मानल जाइत अछि। महाराज भैरव सिंहक आज्ञासँ एहि ग्रंथक रचना भेल जकर पहिल प्रकाशन सभसँ पहिने 1902 ई॰मे पं॰ परमेश्वर शर्माक सम्पादनमे राज प्रेस, दरभंगासँ भेल, पश्चात ईशानचन्द्र विद्याविनोद अपन सम्पादनमे 1934 ई॰मे सिलहटसँ एकरा प्रकाशित कयलनि।

**6. गयापत्तलक :–** ई एक छोट–छीन पुस्तक थिक जे कोनो राजाक आज्ञासँ नहि अपितु विद्यापति 'स्वान्तः सुखाय' लिखने छथि। मंगलाचरणक श्लोक अथवा कोनो राजाक नामोल्लेख एहिमे नहि अछि। मात्रा 'ओम गदाधराय नमः' उल्लेखक पश्चात मूल विषय वर्णित अछि। ग्रंथकार एहिमे अत्यन्त संक्षिप्त एवं सारगर्भित शैलीमे गया–श्राद्ध विधिक वर्णन विवेचन कयने छथि। एहिमे प्रेतशिला, प्रभास–पर्वत, विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद, कश्यपपद आदि तीर्थ केन्द्र पर नानाविध संकल्पवाक्यक माध्यमसँ श्राद्ध कर्म करबाक उल्लेख अछि। अन्तमे सपत्नीक काममोक्ष याचनाक विधान सेहो अछि।

**7. वर्षकृत्य :–** किछु विद्वान एकरा विद्यापतिक रचना होयबामे संदेह प्रकट कयने छथि। एहन बुझाइत अछि जे ग्रंथकार एकर रचना योजनाबद्ध रूपसँ नहि कयने छथि। आश्रयदाताक रूपमे कोनो राजाक नामोल्लेख नहि भेल अछि।

**8. गंगावाक्यावली :–** ई ग्रंथ महारानी विश्वास देवीक आज्ञासँ लिखल गेल। प्रो॰ (डॉ॰) बासुकीनाथ झा लिखने छथि– "रानी विश्वासदेवीक आज्ञासँ ई ग्रंथ लिखल गेल। एहिमे गंगाक स्मरण–कीर्त्तन, पुराण प्रताप तथा गंगातट पर प्राण–विसर्जनक विधि–विधान एवं फल आदिक वर्णन उल्लेख अछि।"[12]

**9. शैवर्स्वस्वसार :–** विद्यापति एहि ग्रंथक रचना महाराज पद्मसिंहक पत्नी महारानी विश्वास देवीक आज्ञासँ कयलनि। 'शैवर्स्वस्वसार'क प्रकाशन मैथिली अकादमी, पटनासँ सन 1979 ई॰मे डॉ॰ इन्द्रकान्त झाक सम्पादनमे भेल। ओकर पश्चात डॉ॰ जयमन्त मिश्र, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दिसिसँ विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली भाग–1क अन्तर्गत एकर संपादन कयलनि। ई एकटा शिव विषयक धर्मिक निबन्ध थिक। एहिमे शिव–पूजनक विधि–विधानक सप्रमाण वर्णन विवेचन भेल अछि।

**10. शैवर्स्वस्वसार प्रमाण भूत संग्रह :–** एकर रचना महाकवि विद्यापति महाराज पद्मसिंहक पत्नी महारानी विश्वास देवीक आज्ञासँ कयलनि। डॉ॰ जयमन्त मिश्रक सम्पादनमे एकर प्रकाशन सन 1980 ई॰मे विद्यापति संस्कृत ग्रंथावली भाग–1क अन्तर्गत कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयसँ भेल। ई पोथी वस्तुतः ग्रंथकारक कोनो मौलिक

रचना नहि थिक। शैवर्स्वस्वसार प्रमाणभूत संग्रहमे शैवर्स्वस्वसारसँ प्रमाणांश निकालि राखल गेल संग्रह अछि जकर उल्लेख शैवर्स्वस्वसारमे कयल गेल अछि।

**11.दानवाक्यावली :–**महाकवि विद्यापति एहि पोथीक रचना महाराज नरसिंहदेव दर्पनारायणक पत्नी धीरमतीक आज्ञासँ कयलनि। एकर पहिल प्रकाशन सन् 1883 ई॰मे पं॰ फणिशर्माक सम्पादनमे भेल। पोथीक प्रारंभमे भगवान मुकुन्दक अभ्यर्थना अछि तत्पश्चात महारानी धीरमतीक विरूदावली। तदन्तर शास्त्रामे विहित बहुविध दानक प्रशंसा करैत ओकर विस्तृत वर्णन प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहि संदर्भमे ग्रंथकार दानक प्रमुख विधि बतबैत ओकर काल, स्थान, पात्र आदिक विवेचन कयने छथि। बारह मासक दानक बारह संकल्प वाक्यक उल्लेख सेहो भेल अछि।

**12. मणिमंजरी :–** महाकवि विद्यापति लिखित ई एकमात्र नाटिका अछि जाहिमे राजा चन्द्रसेन आ मणिमंजरीक कथा वर्णित अछि। एहि नाटिकाक अन्वेषणक श्रेय कवीश्वर चन्दा झा आ डॉ॰ ग्रियर्सनकेँ छनि। एहि नाटिकाक प्रस्तावना आ भरतवाक्यमे एकर रचयिताक रूपमे स्पष्ट रूपसँ विद्यापतिक नामक उल्लेख अछि। सभसँ पहिने पं॰ शिवनन्दन ठाकुर एकरा विद्यापतिक प्रमाणिक रचनाक रूपमे स्वीकार कयलनि।

**13. गोरक्ष विजय :–** ई महाकविक संस्कृत–मैथिली प्राकृत मिश्रित प्रथम प्रमाणिक नाट्य–रचना थिक। एहि पोथीक रचना महाराज शिवसिंहक आज्ञासँ भैरव पूजाक अवसर पर भेल छल। एकरा सर्वप्रथम पुस्तकाकार प्रकाशित करबाक श्रेय म॰ म॰ उमेश मिश्र एवं जयकान्त मिश्रकेँ छनि जे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, तीरभुक्ति, इलाहाबाद दिससँ मूल फोटो–स्टेट ब्लॉगक संग 1961 ई॰मे एकरा प्रकाशित कयलनि।

**14.व्याडी–भक्ति तरंगिणी :–** 'दुर्गाभक्ति तरंगिणी' शैलीमे रचित एहि ग्रंथमे सर्प–पूजाक विधि–विधान ओ पद्धतिक समावेश अछि। एकर रचना विद्यापति दर्पनारायण महाराज नरसिंहक राज्यकालमे कयल। एकर पाण्डुलिपि ढ़ाका विश्वविद्यालयमे सुरक्षित अछि जकर आदिसँ मात्र 16 टा पत्र शेष अछि। सर्प–पूजनसँ सम्बन्ध एहि कृतिकेँ सर्वप्रथम डॉ॰ सुकुमार सेन महाकवि विद्यापतिक बतौने छथि।

**मैथिली पद :–** महाकवि विद्यापति मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कविक रूपमे परिगणित छथि आ हिनक युग मैथिली साहित्यक लेल अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि।

**संदर्भ सूची :–**


1. विद्यापति– डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, मैथिली अकादमी, पटना 1989, पृष्ठ सं. – 4
2. मैथिली साहित्यक इतिहास – डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृष्ठ सं. – 81
3. मैथिली साहित्यक इतिहास – डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृष्ठ सं. – 83
4. उपरोक्त, पृष्ठ सं. – 83, 84
5. उपरोक्त, पृष्ठ सं. – 83

6. उपरोक्त, पृष्ठ सं. – 86
7. उपरोक्त, पृष्ठ सं. – 89–90
8. प्रबंध संग्रह – रमानाथ झा, शेखर प्रकाशन, पटना, 2019, पृष्ठ सं. – 69
9. मैथिली साहित्यक इतिहास – डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृष्ठ सं. – 91
10. उपरोक्त, पृष्ठ सं. – 87
11. विद्यापति काव्यालोचन – डॉ. बासुकिनाथ झा, मैथिली अकादमी, पटना 2018, पृष्ठ सं. – 19
12. उपरोक्त, पृष्ठ सं. – 21